P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VI February-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

भारत में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक समस्याएँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएं व मनोसामाजिक समस्याएँ एवं भारतीय महिलाओं की शिक्षा में भूमिका

गुणवन्ती कौर
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र,
ग्रीनवुड कालेज ऑफ एजुकेशन
रांवर करनाल, हरियाणा

सारांश

शिक्षा एक सतत् और गतिशील प्रक्रिया है। यह बढती हुई समाज से सबंधित है इसलिए यह मूल्यांकन की प्रक्रिया में अब भो है। शिक्षा व्यक्तिव के पौष्टिक और संतुलित सर्वांगीण विकास के लिए है। शिक्षा किसी व्यक्तित्व का विकास करने के लिए एक व्यक्ति की मदद करती है। यह व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क को जीवन की बड़ी–बड़ी वास्तविकता का सामना करने और एक बेहतर जीवन जीने के लिए सक्षम बनाती ह।

यह जीवन में महान उद्देश्यों पर तर्क द्वारा तय करने में मदद करता है, और अपने लक्ष्य की राह पर चलने के लिए आग्रह करती है। संक्षेप में शिक्षा एक आदमी को एक आदमी और एक औरत को एक औरत बनाती है। एक इंसान की शिक्षा के महत्व के बारे में दो राय नही हो सकतो। लेकिन महिलाओं की शिक्षा पुरूषों की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण है। शिक्षित महिलाओं के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि शिक्षा को महिला या पुरूष तक सीमित होना पड़े तो महिलाओं तक निश्चित होनी चाहिए, तभी तो वह एक पीढो से दूसरी पीढो तक पहुँच पाएगी। हर समाज में महिलाओं और पुरूषों की भूमिका में अंतर वर्णित है। यह अंतर सार्वभौमिक नही है। वास्तव में, विभिन्न समुदायों में, पुरूषों और महिलाओं के लिए कई कार्य अतिव्यापी है।

मुख्य शब्द महिलाओं की भूमिका, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, व्यक्तित्व का विकास, समाज का विकास

परिचय

भारत में विभिन्न वर्गो के लोगों में पुरूषों और महिलाओं की भूमिकाओं में मतभेद संकीर्ण या व्यापक उनकी परम्परा और सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार बदलता है। सामान्यतः हमारे सामाजिक रीति–रिवाज और परम्पराओं ने महिलाओं की भूमिका और कार्य के क्षेत्र मे तेजी से लोकतांत्रिकता ला दी है। समाज के विकास के साथ–साथ महिलाओं में शिक्षा भी फैलती जा रही है। इन सब कार्यो, भूमिकाओं और पुरूषों के समान नौकरी से होता है। ऐसा भारत में पहले से ही होना शुरू हो गया है। समाज में एक व्यक्ति की भूमिका उसकी योग्यताओं, क्षमताओं और व्यक्ति की शिक्षा पर निर्भर करता है ताकि उसके लिंग, जाति, रीति–रिवाज और धर्म पर।

महिलाओं की भारत में परम्परागत भूमिका

वैदिक युग में महिलाए खुशी में, खतरों में और सुख में सहभागीदार होती थी। तब महिलाओं की स्थिति बहुत उच्च थी। बाद के वैदिक युग में महिलाओं की स्थिति बिगडो उन्हे बेटे पैदा करने की मशीन के रूप में उनका सम्मान किया जाने लगा। एक पत्नी से उसके पति की आज्ञा का पालन करने की उम्मीद की जाती थी। उसे सब कुछ सहन करना पड़ता था और अपने पति और अपने परिवार के प्रति जो कर्तव्य थे उन्हे निभाना पड़ता था। महाभारत में यह उल्लेख किया गया है कि पुरूषों को महिलाओं की रक्षा इसलिए करनी चाहिए क्योकि वे कमजोर है, उनका स्वभाव संवेदनशील है उनसे प्यार और स्नेह का व्यवहार किया जाना चाहिए। बौद्ध काल में, आदर्श महिला को यूनिवर्सल गुणों का पालन सजकता से करना पड़ता था। घर में प्यार और शांति बनाने कि लिए उसे आज्ञा का पालन करना पड़ता है। अपने आप को समर्पित करने और पति की भक्ति का प्रचार किया गया था। बुद्ध ने अच्छी गृहिणी के कर्तव्य जो नौकर के समान है उसका प्रचार किया। वह अपने पति के अधीनस्थ है। एक शादीशुदा महिला को अपने पति, अपने बच्चों और परिवार के कल्याण के लिए

और देखभाल के लिए उसे घर पर ही रखना चाहिए।

परम्परागत परिवारों में पुरूष ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। और महिलाए पुरूषों पर निर्भर करती है। पति अपनी पत्नी से उच्च स्थिति का आंनद उठाते है और निर्णय लेने की भूमिका में वे ही सदा उच्च रहत है। पत्नि परिवार में Supervene स्थिति को स्वीकार करती है और घरेलू काम में उसकी भूमिका पूरक बनी हुई है।

भारत में महिलाओं की बदलती भूमिका

आज के युग में महिलाओं को बच्चे जनने वाली मशीन के रूप में नहीं देखा जाता और वे घर पर भी रहना नही चाहती। अब इसमें कोई संदेह नही कि अधिकतर भारतीय महिलाएँ अपनी स्वाधीन भूमिका को अच्छे से भी अच्छा करना चाहती है। आज मध्यम वर्गीय भारतीय महिला के लिए यह वास्तविकता बन गई है कि यदि उन्हे सम्मान जनक रोजगार मिले तो उनकी आर्थिक रूप से स्वंतत्र होने की सम्भावना है। निम्न वर्गीय और निम्न मध्यम वर्ग की महिलाओं को प्रायः आर्थिक करणों के कारण काम करने के लिए बाध्य किया जाता था। किन्तु घर क बाहर काम करने के कई कारण है– आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जिनके कारण महिलाओं को प्रायः आर्थिक कारणों के कारण काम करने के लिए बाध्य किया जाता था। किंतु घर के बाहर काम करने के कई कारण है– आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जिनके कारण महिलाएँ व्यवसाय के बाजार में प्रविष्ट हुई। अब वे दिन बीत गये जब भारतीय महिलाएँ घर की चार दीवारी में पुरूष सदस्यों के अगूठे क नीचे अर्थात् दबाव में रहती है। वे दिन भी चले गए जब महिलाओं का बाहरी दुनिया के साथ संर्पक उनके सम्मान गरिमा और शालोनता के लिए खतरा माना जाता था। अब महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए जागरूक है। पुरानी रीतियों और रूढियों को तोड़ते हुए आज न केवल किशोरिया अपितु प्रौढ़ महिलाएँ भी स्कूलों व कॉलेजो की ओर रूख कर रही है ताकि वे भी स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त कर सके। वे रंग–बिंरगे पंखों के साथ उड़ान भरने के लिए बाहर निकल रही है। वे पुरूषा पर निर्भर नहीं रहना चाहती है। वे अपने जीवन को अधिक समय तक माता–पिता, पति व पुत्रों पर निर्भर नही रखना चाहती। वे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। यदि जरूरत पड़े तो वह अपनी आजीविका भी कमा सकती है।

वे अपनी आर्थिक आजादी चाहती है। वे पुरूषों के कंधो के साथ कंधा मिलाकर चलना चाहती है। रोजगार की तलाश में उनके लिए शिक्षा पासपोट के समान है।

मध्यम वर्ग की महिलाओं के लिए बढते मूल्यों, परिवार प्रणाली और परिस्थिति के दबाव के कारण राजगार की तलाश मजबूरी बन गयी है। शिक्षित महिलाओं की संख्या लगातार हमारे देश में बढ़ रही है, लेकिन आयु, लिंग व देश के श्रम बल की व्यवसायिक सरंचना न केवल जनसांख्यिकीय बल्कि महिलाओं के अधिकार और समाज में महिलाओं की स्थिति के प्रे मुददे के साथ जुड़ा हुआ है।

महिलाओं के लिए विभिन्न नौकरियों के अवसर खुल गए है। वे शिक्षक, नर्स, डॉक्टर, प्रशासक और भी उद्योगपति हा सकती है। हाल में ही भारतीय सरकार ने महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने का फैसला किया है। राज्य सरकार भी विशेष रूप से निर्माण उद्योग में आग्रह कर रही है। महिलाओं के लिए अधिक संभावित रोजगार पैदा करने क लिए एक योजना बनाई जा रही है। आधुनिक समाज के संबध में महिलाओं की भूमिका स्पष्ट रूप से बदल गयी है। विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति के कारण, घर के कामों के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग समय की बचत में मदद मिलती है। जिसका परिणाम यह निकला है कि महिलाओं के पास घर का काम करने के बाद भी कुछ समय बचता है। उस समय में किशोरियों शिक्षा प्राप्त करती है, और उनके विचारो में परिवर्तन आ रहा है। महिलाओं की आधुनिक भूमिका पति, घर और बच्चों की देखभाल के लिए है, लेकिन सारी जिम्मेवारी केवल महिलाओं की नही है बल्कि उनके पतियों को भी उनके घरेलू कार्यो में सहायता करनी चाहिए। महिलाओं को पुरूषों के समान महत्व और स्थिति मिलनी चाहिए और साथ मिलकर अपना योगदान देना चाहिए।

आधुनिक भूमिका प्रदर्शन करने के साथ–साथ महिलाओं को घरेलू सुख के हित में पांरपरिक भूमिका निभानी होगी। महिलाओं को दोहरी भूमिका दी गई है जिसमें उन्हे घर को संभालने के साथ–साथ घर की आर्थिक स्थिति में भी सहायता करनी पड़ती है। आत्म–समायोजन अवधारणा योगदान समय और समाज के साथ बदलता है।

श्रीमति इदिंरा गांधी जी के जन्मदिवस के अवसर पर परिवार, परामश केंद्र भारत महिला मण्डल सरकार द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समाज बदलने में पत्नी की भूमिका कुछ वक्ताओं ने आजादी के पर्व के दिनो से पत्नी की भूमिका की जॉच की और वर्तमान समाज की कामकाजी महिलाओं के साथ तुलना की। श्रीमति दुर्गा भास्कर स्टेशन निर्देशक, ऑल इंडिया रेडियों सेवाओं ने महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं जैसे घर को संभालना और आर्थिक रूप से मदद करने के बारे में अपनी विचारधारा व्यक्त की है। कामकाजी महिलाओं के उपर दोहरा बोझ होता है। इसलिए पति को अपने मूल्यों के साथ और अधिक सहयोग देने का सुझाव दिया। पुरूषों को ऐसे सेमिनार में भाग लेना चाहिए जिसमें महिलाओं की डबल बोझ की समस्याओं से अवगत कराया जाता है इसका सुझाव दिया गया। आज महिलाओं की अपनी कुछ आशाए और आकाक्षाएं है जो घर की चार दीवारी से परे है। उनकी अपनी भविष्य, अपने बच्चों के भविष्य आर परिवार को लेकर अनेक सपने है। वह प्यार और स्नेह जो मां अपने बच्चों पर न्यौछावर करती है उसे पुरूष के द्वारा प्यार और स्नेह के साथ नही तोला जा सकता।

कामकाजी मां वे है जो घर के बाहर जाकर काम करती है और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सहायता करती है। वे विभिन्न व्यवसायों जैसे शिक्षा, नर्सरी

आदि प्रशासन में कार्य कर रही है। महिलाओं का घर से बाहर जाकर काम करना कोई अदभुत घटना नहीं है। महिलाएँ घर की आर्थिक स्थिति में आदिम दिनों से ही भाग ले रही है। वैदिक काल काल क दौरान और बाद में यह माना जाता था कि जो महिलाएँ घर के बाहर काम करती है वे नीचले तबके से संबधित है। महिलाओं द्वारा बगानों, कारखानों और खदानों में रोजगार की तलाश वर्तमान शताब्दी के प्रांरभिक वर्षो से ही शुरू हो गई थी। भारत की स्वतंत्रता के बाद संविधान ने यह घोषित किया कि महिलाओं के रोजगार के खिलाफ कोई भेदभाव नही होना चाहिए। कार्य बल में महिलाओं की संख्या मे वृद्धि हो रही है। महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए ना कि उन परिस्थितियों से भागना चाहिए। बल्कि उनका हिम्मत के साथ सामना करना चाहिए। स्थिति चाहे कैसी भी हो उसका सामना हिम्मत के साथ करना चाहिए। शिक्षा का अर्थ केवल डिग्री लेना और अपने नाम के आगे कुछ अक्षर लगवाना नही है, बल्कि अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको बदलना है। महिलाओं की नई पीढ़ी को बेहतर बनाने जिनके कधो पर राष्ट्र की नियति टिकी है।

आजादी के बाद महिला की शिक्षा में बहुत सुधार आया है। आज हम महिलाओं को जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में देखते है जैसे विश्वविद्यालयों, अस्पतालों अनुसंधान प्रयोगशाला सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में

महिलाएँ अध्यापन के पेशे में

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी है। यह आंकाक्षाओं के खंभों को वास्तविकता के रूप में परिवर्तित कर रहे है। मेरे अनुसार दुनिया में शिक्षक के पेशों से कोई अन्य पेशा महत्वपूर्ण नही है। शिक्षक ही वही व्यक्ति ह जिसे विभिन्न विषय क्षेत्रों, सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रमों का ज्ञान और कौशल है। अध्यापक वह व्यक्ति है जो अपने कौशल को सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलूओं को विकसित करने के लिए छात्र को सिखा सकता है। एक अध्यापक की जिम्मेवारी होती है कि वे छात्रों की विभिन्न विषयों में रूचि पैदा करे और छात्रों को समाज की भलाई और अनशासन के लिए प्रोत्साहित करना है।

इस बात में कोई भी संदेह नही है कि शिक्षण का क्षेत्र तभी शिक्षित महिलाओं के लिए खुला है।यह महिलाओं के लिए एक महान श्रद्धांजलि है कि वे केवल शिक्षिकाएं नही रहो बल्कि वे शिक्षण संस्थानों में उच्च Occupacing की स्थिति तक पहुच गई है। आज महिलाएँ कुलपति, स्कूल और कॉलेज की प्रधानाध्यापिकाएं और स्कूल की निरीक्षक है। स्कूल और कॉलेज में भाग लेने से वे देश के आधुनिकरण में सक्रिय भूमिका निभा रही ह।

कामकाजी महिलाओं की समस्याए

यह एक खुली सच्चाई है कि कामकाजी महिलाओं को समस्याओं का सामना करना पडता है। क्योंकि वह महिला है। कामकाजी महिला वह है जिन्हे अपने कार्य के लिए भुगतान मिलता है। महिलाओं की भूमिका के लिए सामाजिक रवैया कानून की दृष्टि से पीछे है। महिलाओं के लिए कुछ कार्यो को सहो समझा जाता है और कुछ को नही।

महिलाओं को इन क्षेत्रों में रोजगार आसानी से मिल जाता है जैसे नर्स, डॉक्टर, शिक्षक, पोषणिक क्षेत्रों व सचिवों में। यदि महिलाएँ इंजीनियर, प्रंबधक या भूवैज्ञानिक उपलब्ध हो या फिर भी वरीयता बराबर क योग्य पुरूषों को दी जाती है। पूर्वाग्रह भर्ती स्तर पर भी लिंग बाधा पैदा करता है जब पारिश्रमिक की बात आती है। कानून समानता का दावा करता है लेकिन अपने व्यवहार में नही लाता। महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम सक्षम और कम कुशल समझा जाता है और समान कार्य को करने के लिए उन्हे असमान वेतन मिलता है। पुरूषों की पुरानी सोच व आयु के कारण महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

महिलाओं के Cooperate Sector मे होने से यह पता लगाया गया है कि महिलाएँ भी पुरूष की तुलना में शीर्श पर पहुॅचने में बेहतर है। शीर्ष पर पहुचे हुए पुरूष कार्यकर्ता से यह उम्मीद करते है कि Female पुरूष को अपेक्षा ज्यादा सक्षम होनी चाहिए। सामाजिक वैज्ञानिक और परम्पराओं से वातानुकूलित महिलाएँ अपने सहयागियों का समान लिंग होने के कारण समर्थन नही करती। ऐसी परिस्थितियों में कार्य करना पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर ज्यादा परेशानी डालना है। इन समस्याओं के कारण महिलाएँ अपने क्षेत्र में प्रगति नही कर पाती। जिसके कारण वे अपनी योग्यता से कम योग्यता वाले क्षेत्र में भी कार्य करने को तैयार हो जाती है। महिलाओं के घर के कार्य करने क लिए कोई वेतन नहीं दिया जाता। उस पर घर के सारे कामों का और बाहर के कामों का बोझ होता है। फिर भी महिलाओं को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है जबकि वह कमा भी रही होती है। बहुत से परिवारों में आज भी महिलाओं की आय उनके पिता, पति और ससुराल को दे दी जाती है। इसलिए उनकी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की इच्छा व्यर्थ हो जाती है। महिलाओं को औद्योगिक क्षेत्र में लिंग भेद की समस्या का सामना करना पडता है। तकनीकी प्रगति के कारण महिला कर्मचारियों को नजरअदांज किया जाता है कोई भी उनेक कौशलों को ऊपर उठाने के बारे में शायद नही सोचता। मातृत्व अवकाश भी उचित रूप से नही दिया जाता है।

महिलाओ को कार्यक्षेत्र से हटाना या किसी दूसरे को उनकी जगह पर रख लेना बहुत आसान होता है। अधिकतर कामकाजी महिलाओं की समस्याओं की जड़ें उनके सामाजिक दर्शन से जुड़ी है। परम्परागत तौर पर पुरूषों को घर का मुखिया तथा अन्नदाता माना गया है और महिलाओं को घर का रखरखाव तथा बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी होती थी। एक महत्वपूर्ण बदलाव महिलाओं की भूमिकाओं, उनके परिवार तथा कार्यक्षेत्र में जरूरी है। हमारे देश का औद्यागिकरण बहुत तेजी से हो रहा है। और उसका एक प्रभाव हमारे संयुक्त परिवारों पर पड़ रहा है। जो कि छोटी–छोटी ईकाइयों में खंडित हो रहे है। यह कामकाजी महिलाओं को अपंग बना रहा है। पूरी जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर पड़ रही है। चाहे

वह घर संभालने का हो या कार्यक्षेत्र का। शिक्षित होने के कारण वह अपने बच्चों को बेहतरीन शिक्षा देना चाहती हैं, पर समय की कमी होने के कारण वह अपने बच्चों के लिए समय नही निकाल पाती। अगर घर में बडे, बुजुर्ग न हो ता यह एक गंभीर समस्या बन जाती है। हर औरत यह समझती है कि बच्चों को घरेलू नाकरों के साथ कुछ घण्टों के लिए छोडना अनुचित है। बेबी सीटर की प्रथा अभी तक प्रचलन में नही आई है। भारत जैसे औसत देश में अच्छी नौकरिया नहीं है, जहॉ बच्चों को छः से आठ घण्टों के लिए उनकी अच्छी देखभाल हो सके। ऐसे मामलों में बच्चों को एक सुरक्षित स्थान पर भेजना कठिन हो जाता है। चाहे उन्हे घर के बड़े– बुजुर्ग के साथ रखा जाए जहॉ वो सुरक्षित हाथों में होगे और उनकी ठीक प्रकार से देखभाल होगी। जब तक कि उनकी प्राइमरी स्कूल में जाने की उम्र नहीं हो जाती।

यह एक महत्वपूर्ण कारण है जिसकी वजह से नारी लगातार शारीरिक एवं मानसिक तनाव के तहत एक दुविधा में रहती है कि किसको प्राथमिकता दो जानी चाहिए परिवार या सेवा को। ऐसी समस्या उन कार्यरत महिलाओं के साथ नही होती जिनकी नौकरी सरल प्रकार की है और उनको गहराई से अप टू डेट अध्ययन की जरूरत नहीं है। दूसरे प्रकार की उन शिक्षित महिलाओं के सामने आती है जिन्हे संयुक्त परिवार में रहना पड़ता है और उनके ससुराल में माता–पिता शिक्षित नहीं है। एक शिक्षित महिला बच्चों को पालने और उन्हें शिक्षित करने के बारे में उनके अनेक विचार होते है। पुरानी पीढ़ी के बुजुर्गों के पास भी एक जैसे विचार होते है तथापि इन दोनो पीढ़ीयों के मध्य गलतफहमी की स्थिति बनी रहती है। अकसर यह माना जाता है कि बड़–बूढों को सम्मान देना और उनकी इच्छाओं का पालन करने में शिक्षित महिलाओं को निराशा होती है। ये और अन्य गुणात्मक परिवर्तन परिवार के अंदर और बाहर दोनों महिलाओं की स्थिति पर परिणाम स पूर्ण अकेलेपन को जन्म देती है। लेकिन महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण और परिवार में उनकी भूमिका के प्रति ज्यादा बदलाव नहीं आया है। परन्तु आज भी आरत पर परिवार और बच्चों की देखभाल की प्राथमिक जिम्मेवारी मानी जाती है। घर के सभी दायित्वों एवं कर्तव्यों को पूरा करने में एक कामकाजी महिला बोझ से युक्त हो जाती है।

महिलाएँ लगभग आधे कार्यबल में अपना सहयोग देती है। जिन्हे मानव संसाधन के रूप में उपयोग किया जाता है। महिला समाज की रीढ़ की हड्डी है। लेकिन पुरूषों के विपरीत वे लगातार खुद को दोनों क्षेत्रों में घर और कार्यालय में साबित करने में लगी हुई है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में काम किया है और आज के आधुनिक समाज में उन्हे पुरूषों की मदद के बिना नौकरी प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त है। सदी के अंत तक कुछ महिलाओं ने इसलिए काम किया क्योंकि गरीबी ने उन्हे मजबूर किया। काफी हद तक काम करने की क्षमता में वृद्धि हुई है क्योंकि वो अपने परिवार का स्तर बनाना चाहती थी या फिर वे काम करना चाहती थी। इन महिलाओ ने देश के आधुनिकीकरण में सक्रिय रूप से भाग लेने में उच्च विद्यालयों और महाविद्यालयों मे प्राप्त शिक्षा का उपयोग कर रहे है। इन बदलावों ने महिलाओं की स्थिति में दोनो ही परिवार और कार्यस्थल पर गुणात्मक बदलाव दोनों ही लेकर आए है। अगर महिला कामकाजी ह तो उसकी पारिवारिक खुशी बढ़ती है या घटती है तथा उसका उसके पति के साथ संबध में बदलाव आता है क्या कामकाजी महिलाओं का अपने परिवार पर नियत्रंण कम हो जाता है या नही यह प्रश्न कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक स्तर पर उठते है। कामकाजी महिलाएँ अपने पारिवारिक जीवन तथा कार्यस्थल में सामंजस्य बनाने को गंभीर समस्या का सामना करती है। इसके अतिरिक्त कामकाजी महिलाएँ भावनात्मक विकार का शिकार होती है जब वह अकेले ही घर की जिम्मेदारियों को निभाती है तथा वह अपने परिवार, बच्चों, पति तथा कार्यस्थल की ठीक प्रकार से दायित्वा को पूरा नही कर पाती। इस भावनात्मक विकार के फलस्वरूप उनको कार्यक्षेत्र में पीछे दिया जाता है। जिससे वे आत्मगलानी महसूस करती है तथा उनको कार्यक्षमता पर भी असर पड़ता है। इसलिए यह विषय आधुनिक अध्ययन के लिए बहुत कठिन है। क्योंकि विवाहित महिलाएँ अपने कार्यक्षेत्र में इज्जत से काम करते हुए अपने परिवार को संतुष्ट करते हुए तथा अपने मन की शांति बनाये रखना मुश्किल है।

महिला शिक्षिकाओं की सामाजिक समस्याएं

व्यापक समाज में पहचान की कमी क कारण सामाजिक समस्याए आती है। महिलाओं के लिए परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घर को सांझा करना और समाज के कल्याण के लिए काम करना बहुत मुश्किल होता है। उनके पास स्वयं के पुर्ननिर्माण का उचित समय नही होता। इस प्रकार की समस्याओं को सामाजिक समस्याए कहते है।

महिला शिक्षिकाओं की मनोवैज्ञानिक समस्याएं

जब एक कामकाजी महिला को अपने सहकमियों एवं ससुराल वालो, पति एवं बच्चों से अस्वीकार्यता का अनुभव होता है तो सभी समस्याए अंततः उनकी भावनाओं के साथ जुड जाती है। पति बच्चों एवं ससुराल वालों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय की कमी उनमें चिंता का कारण बन जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकाण से जो मनुष्य भावनात्मक रूप से कमजोर है उसे आंतरिक चिंता अवश्य होगी। फलस्वरूप घबराहट, भय, निराशा और अशांत स्वभाव का होना जायज है।

महिला शिक्षिकाओं की मनोसामाजिक समस्याएं

महिला शिक्षिकाए पति से अस्वीकृति की भावनाओं का अनुभव करती है। शिक्षित कामकाजी महिलाओं को ये भावनाय उनके काम को प्रभावित करती है। उनका तनाव पति, बच्चों, ससुराल और उनके सहयोगीयों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। मनोवैज्ञानिक एक भावनात्मक चिंता, भय, निराशा आंतरिक तनाव का कारण बन जाता है। मनोवैज्ञानिक सामाजिक अवधि महिलाओं के जीवन, काम और पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। आज मानव जीवन अनेक कठनाईयों एवं समस्याओं से भरा है। आज एक परिवार में

महिलाय दोहरी जिम्मेदारिया निभाने के लिए तैयार हैं पर परिणामस्वरूप विभिन्न मनोवैज्ञानिक, सामाजिक समस्याओं से जीवन कठिन हो गया है। आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के द्वारा मानव जीवन नए आयामो से परिचित हुआ है। आज मानव जीवन विभिन्न समस्याओं और संघषो से जूझ रहा है। जो कि हमारी मूलभूत एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से संबधित है।

परम्परागत दृष्टिकोण से पुरूषों को मानसिक सामाजिक समस्याओं से ग्रस्त पाया गया है। क्योंकि परिवार की सारी जिम्मेदारियां उनके कंधों पर होती थी। आधुनिक युग में यह धारणा बदल गई है। महिला आज अपने घर परिवार के साथ–साथ, रोजगार भी संभाल रही है, जिसस उन पर दोहरी जिम्मेदारो आ गई। इस कारण उन्हे अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है। अनेक बिमारियां जैसे मानसिक तनाव, घबराहट, गुस्सा, डर, रक्तचाप जैसे रोग महिलाओं को आजकल ग्रसित कर रहे है। महिलाओं के मानसिक परिवेश के अध्ययन से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन मानसिक बिमारियों से महिलाओं का आत्मबल, हिम्मत, ताकत, क्षमता, तरक्की किस प्रकार प्रभावित करता है। सामाजिक परिवेश महिलाओं को अनिश्चित एवं संकोची बनाता है। महिलाओं को समाज में देखने का नजरीया तथा उनका मूल्यांकन करने का ढंग उनके अन्दर सामाजिक अनिश्चित्ता उत्पन्न करता है।

कामकाजी महिलायें खासतौर पर शिक्षिकाओं की मानसिक, सामाजिक समस्याओं जिसके द्वारा उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है, वह है निराशा अगर निराशा जैसी बिमारियों का उपचार समय से नहीं किया गया तब वे महिला शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता, कक्षा–कक्ष नियन्त्रण एवं शिक्षण तकनीकी को प्रभावित करता है। कामकाजी महिलायें के मनोसामाजिक समस्याओं का विचार समझते हुए यह समझा जा सकता है कि इन समस्याओ से उनका जीवन प्रभावित होता है।

यह विचार किया जाता है, कि महिला शिक्षिकाओं में सृजनात्मक हुनर एवं मनोसामाजिक समस्याओं का दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी मानसिक–सामाजिक समस्याओं की पहचान की जाए तथा बदलते हुए शैक्षिक परिवेश का अध्ययन किया जाए जिससे उनकी मानसिक–सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूढ़ा जा सके तथा महिला शिक्षिकाओं को सम्मानजनक दृष्टि से देखा जा सकें। उनका सहयोग तथा इज्जत प्रदान की जा सके। जिसके द्वारा वह स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य मन का विकास कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. दास एस. प्रधान :'द स्टेटस ऑफ इण्डियन वुमैन'
2. बी. मृदुल्ला : 'भारत मे महिलाए
3. जैन देवकी : 'भारतीय महिलाए'
4. बानों, अफसर : 'भारतीय महिलाए– बदलते चेहरे'
5. दुर्गा परमार : 'श्रमजीवी महिलायें'
6. आशा व्हेला : 'भारतीय नारी दशा दिशा'
7. चन्द्रावली त्रिपाठी : 'भारतीय समाज में नारी आदेशों का विकास'
8. जवाहरलाल नेहरू : 'हिन्दूस्तान की कहानी'